श्री हनुमान अष्टक | By Mukesh Kumar |

बाल समय रवि भक्षि लियो तब,
तीनहुं लोक भयो अंधियारो।
ताहि सों त्रास भयो जग को,
यह संकट काहु सों जात न टारो॥
देवन आन करि बिनती तब,
छाड़ी दियो रवि कष्ट निवारो।
को नहिं जानत है जग में कपि,
संकट मोचन नाम तिहारो॥१॥

बालि की त्रास कपीस बसैं गिरि,
जात महाप्रभु पंथ निहारो।
चौंकि महामुनि साप दियो तब,
चाहिय कौन बिचार बिचारो॥
कैद्विज रूप लिवाय महाप्रभु,
सो तुम दास के सोक निवारो।
को नहिं जानत है जग में कपि,
संकट मोचन नाम तिहारो॥२॥

अंगद के संग लेन गए सिय,
खोज कपीस यह बैन उचारो।
जीवत ना बचिहौ हम सो जु,
बिना सुधि लाय इहाँ पगु धारो॥
हेरि थके तट सिंधु सबै तब,
लाय सिया-सुधि प्राण उबारो।
को नहिं जानत है जग में कपि,
संकट मोचन नाम तिहारो॥३॥

रावण त्रास दई सिय को सब,
राक्षसि सों कहि सोक निवारो।
ताहि समय हनुमान महाप्रभु,
जाय महा रजनीचर मारो॥
चाहत सीय असोक सों आगि सु,
दै प्रभु मुद्रिका सोक निवारो।
को नहिं जानत है जग में कपि,
संकट मोचन नाम तिहारो॥४॥

बान लाग्यो उर लछिमन के तब,
प्राण तजे सुत रावन मारो।
लै गृह बैद्य सुषेन समेत,
तबै गिरि द्रोण सु बीर उपारो॥
आनि सजीवन हाथ दई तब,
लछिमन के तुम प्राण उबारो।
को नहिं जानत है जग में कपि,
संकट मोचन नाम तिहारो॥५॥

रावण युद्ध अजान कियो तब,
नाग कि फांस सबै सिर डारो।

श्रीरघुनाथ समेत सबै दल,
मोह् भयो यह् संकट भारो ॥
आनि खगेस तबै हनुमान जु,
बंधन काटि सुत्रास निवारो ।
को नहिं जानत है जग में कपि,
संकट मोचन नाम तिहारो ॥६ ॥

बंधन के त्रास दई सुत रावण,
जाय महाप्रभु सो बैन उचारो ।
बंधन काटि त्रासहि सबहि,
हनुमान महाप्रभु सोक निवारो ॥
को नहिं जानत है जग में कपि,
संकट मोचन नाम तिहारो ॥७ ॥

तुम भजौ राम को भाव सहित,
यह् संकट कटै मिटै सब पीरो ।
जो सुमिरै हनुमत बलबीरा,
संकट कटै मिटै सब पीरो ॥
जय जय जय हनुमान गोसाईं,
कृपा करहु गुरुदेव की नाईं ।
जो सत बार पाठ कर कोई,
छूटहि बंदि महा सुख होई ॥८ ॥

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%b6%e0%a5%8d%e0%a4%b0%e0%a5%80-%e0%a4%b9%e0%a4%a8%e0%a5%81%e0%a4%ae%e0%a4%be%e0%a4%a8-%e0%a4%85%e0%a4%b7%e0%a5%8d%e0%a4%9f%e0%a4%95-by-mukesh-kumar/